डॉ० रश्मि कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
(कला, इतिहास विभाग)
कला एवं शिल्प महाविद्यालय,
पटना (पटना विश्वविद्यालय)
Mobile /Whatsapp No.9155696260
Email Id:-rashmilily240376@gmail.com.

B.F.A. VIIth Semester

बाजेन्टाइन कला

प्राचीन यूनानी रोमन धार्मिक भावना प्राचीन सभ्यता के साथ-साथ हीं धीरे-धीरे लुप्त होने लगी और पूर्वी देशों के धार्मिक विश्वास उसका स्थान लेने का प्रयत्न करने लगे | यहाँ पूर्वी धर्मों में श्रद्धा और विश्वास के आधार पर सांसारिक बन्धनों से मुक्ति का मार्ग खोजा गया था | संप्रदायगत आचार्यों द्वारा दीक्षा प्राप्त करने से साधक स्वयं को ईश्वर के अधिक निकट समझने लगे इस प्रकार धर्म ने संसार से बेसुमार ख्याति प्राप्त की, इस तरह ईसाई धर्म से सम्बंधित इसाई कला हीं बाजेन्टाइन कला कहलाई |

यह कला धर्म द्वारा संचालित है | धर्म का उपदेश देती है | चूँकि यह धर्म लोगों को तत्कालीन कष्टों से छुटकारा दिलाने वाला था, इसलिए हजारों की संख्या में लोग इस धर्म के अनुयायी बने | इस धर्म के उदय का दूसरा कारण यह था की इस धर्म की स्थापना से पुर्व भूमध्य सागर के देशों तथा मध्य पूर्व के लोग वहु देववादी थे अत: लोग किसी एक सरल धर्म के लिए तरस रहे थे | ऐसी ही स्थिति में ईसाई धर्म का उदय हुआ |

सर्वप्रथम महान रोमन सम्राट कान्सटेनटाइन ने इसी धर्म को स्वयं स्वीकार कर राजधर्म घोषित किया | धीरे-धीरे रोमन सम्प्रदाय के समस्त प्रदेशों में यह धर्म फ़ैल गया |

अन्य सम्राटों ने भी इसे राजधर्म घोषित कर दिया | धीरे-धीरे रोम इसी धर्म के प्रचार का केंद्र बन गया |

प्राचीन पूर्वी रोम साम्राज्य की राजधानी बाजेन्टाइन थी, जिसे कान्सटेन्टाइन बाजेन्टाइन ने ३२७ ई० में अपनी रोमन साम्राज्य की राजधानी को इटली से हटाकर ग्रीक शहर के बाजेन्टाइन में स्थापित किया था |

अधिकाधिक संगठित अनुयायियों ने अपने इस धर्म के प्रतिक चिन्ह बनाये | जैसे :- सफेद कबूतर शांति के प्रतीक | जाईन नदी पवित्र नदी मानी गयी | अंगूर के गुच्छे या बेल नियंत्रण के प्रतीक माने गये |

इस तरह पूर्वी कला शैलियों में बाजेन्टाइन कला शैली इसाई कला की एक बहुत प्रसिद्ध एबं प्राचीन कला शैली मानी गई |

बाजेन्टाइन कला का अध्ययन तीन कालों के आधार पर किया जा सकता है |

(i) पूर्व बाजेन्टाइन काल-३२० से ७६७ ई०

(ii) प्रतिमा विरोधी काल-७१७ से ८४२ ई०

(iii) बाजेन्टाइन पुनरुत्थान -८६७ से १४७३ ई०

(१) पूर्व बाजेन्टाइन काल :- इस काल के कला का मुख्य केंद्र सं० Sophia Church था | पाण्डुलिपि सज्जा का कार्य भी इसी युग में हुआ था | संत सोफिया चर्च कला और स्थापत्य का महत्वपूर्ण उदाहरण है | गिरिजाघरों की छतों, फर्श व भित्तियों को ईसाँ संतों और धर्मावलम्बियों संरक्षकों के चित्रों से सजाये जाने की प्रथा बड़ी

लोकप्रिय थी | इस कला में यूनानी, पूर्व व स्थानीय तत्वों का समावेश हुआ | प्रारंभिक ईसाई काल की सादगी का प्रभाव भी कला में बना रहा और चित्रों के सपाटपन और सरलीकरण की प्रवृति तथा विशिष्ट मुद्रा इस कला के स्थाई लक्षण बने रहे | रैम्बुल गाँस्पल, आदवीय गाँस्पल, सिनीप गाँस्पल तथा विज्ञानक गाँस्पल इस कला के उत्कृष्ट लक्षण हैं |

(२) प्रतिभा विरोधी काल :-

(**Flowering Period**)

(2) प्रतिभा विरोधी काल:- 717-842 ई० कुछ लेखकों ने इसे दो भागों में विभक्त किया है प्रथम चरण 730- 787 ई० तथा द्वितीय चरण चरण 815- 843 ई० तक | अति नैतिकतावादियों का विशेष प्रभुत्व इस कल में रहा जो पूर्वी धार्मिक मान्यता के प्रभाव में कला में किसी प्रकार के भी आकृति का अंकन धर्म के मुल सिधान्तों की अवहेलना स्वरूप मानते थे | थ्रियो तृतीय ने इसे राजकीय नीति का अंग बना लिया और सर्वप्रथम अपने महल के कांस्य द्वार पर बनी ईसा की प्रतिमा को नष्ट करवाकर उसके स्थान पर क्रास बनबाया | आकृति मूलक कला के विरुद्ध छोड़े गये अभिमान के फलस्वरूप इस कला को व्यापक पैमाने पर नस्ट किया गया | केवल अलंकारिक और प्रतीकात्मक कला ही बची रही| इस कारण नौवी शती से पूर्व बाजेन्टाइन कला के बारे में अधिक सामग्री उपलब्ध नहीं होती | पश्चिमी फ्रांस क्षेत्र में भी इसका प्रभाव फैला वहाँ स्थापत्य अलंकरण का व्यापक प्रयोग हुआ, जिसमें मिट्टियों को ज्यामितीय पट्टियों में बाँट कर या स्थापत्य दृश्यों द्वारा मिट्टी

सज्जा की जाती थी| जर्मनी और स्पेन के गिरिजाघरों में ऐसे उदाहरण मिलते हैं| यह विचित्र संयोग है की प्रतिमा भंजक सम्राट थियोफिलास की साम्राज्ञी थियोडोरा द्वारा ही ८४३ में महल के द्वार पर पुन: ईसा की पुँस्थापना करवाई गई और इस नकारात्मक अभियान का अंत हुआ|

पुनरुत्थान काल:-

इस काल के विकास में मेसिडोनियन और कामनोनियन वंशों का महत्वपूर्ण योगदान रहा| विदेशी सत्ता के प्रभुत्व का अंत मेसिडोनियन शासक बंसिल की शक्ति के उदय के साथ-साथ हुआ| मूर्तियों का स्थान प्रतिमा चित्रों तथा मणीकुट्म चित्रों ने ले लिया| पांडुलिपि चित्रण भी नई राजसी भव्यता लिए प्रचुर मात्रा में विभिन्न केन्द्रों में विकसित हुआ| राजकीय संरक्षण और ईसाई मठों को नियंत्रण और देख-रेख में सुसंगठित चित्र शालाओं का विस्तृत विकास हुआ और एक प्रकाष्ठा तक पहुंचने में इन्होने अभूतपूर्व योगदान दिया| शास्त्रीय परंपरा के पुनरावृति इस काल की कला की विशेषता थी पर उसका बाजेन्टाइन स्वरुप वैसा का वैसा रहा| जौसुआ, रोटुलस और पेरिस साल्टर पांडु लिपियों के चित्रों में यूनानी यथार्थवाद की प्रवृति बहुत स्पष्ट है| पर बाजेन्टाइन कला जे शाश्त्रीय यथार्थ को अपनी दृष्टी से देखा और इसी कारण उनकी कला में इसका नीजी विशिष्ट रूप इसके प्रभाव के होते हुए भी बना रहा|

बाजेन्टाइन कला का अध्ययतन निम्न आधार किया जा सकता है|

(1) मणिकुट्टिम
(Mosaic)

इस चित्र की परम्परा कला में आरम्भिक रोमनयुग में बहुत लोकप्रिय पोम्पी आई की आरम्भिक इसाई कला में मणिकुट्टिम के कार्य में रंगीन संगमरमर के चौकोर टुकड़ों का ~~ब्रति~~ प्रयोग बहुत बढ़ गया । प्रायः सुनहरी टुकड़े के लिए

लाल तथा नीले टुकड़े पक्षियों के पंख के लिए नीले तथा हरे टुकड़े समुद्र के लिए प्रयुक्त किए गए ।

इन चित्रों में जिन घटनाओं अंकन हुआ उनमें प्रतिक की भी व्यंजना होती है । जैसे ईसा का यातिजन्म ईसा के ईशा शक्ति होने का प्रतिक है । इसी प्रकार मेड़ों तथा मेमने संतों तथा भक्तों के प्रतिक हैं ।

उदा0:- (1) The Good Shepherd, Mosic from the entrance wall of the Mausodewn of placid Pavenna A.D. 425.50

इस दृश्य में ईसा को मध्य में विराजमान है । बांये हाथ को मैमने की तरफ बढ़ा हुए । बाँए हाथ में क्रॉस पकड़े हैं । ईसा के दोनों तरफ तीन तीन भेड़े हैं । जो कि सम्पूर्ण चित्र को संतुलित है । यह चित्र अधिवृताकार में बना है । चारो तरफ अलंकरण है जो कि इसकी भव्यता रहस्यात्मकता को बढ़ा देती है ।

(2) Christ Enthroned between Angelr and sants

प्रारम्भिक बामजेन्टाइन में यह मोजाइक चित्र है जिसमें ईसा को पृथ्वी पर बैठे दिखाया है जो कि ईसा के नियंत्रण का प्रतिक है । दोनों तरफ दो साधु खड़े हैं । सुनरी पृष्ठभूमि दिखाई है । यह चित्र भी अधिवृताकार में बना है ।

Justinian and Attendants (4) Theodora and atlendants apsemosaic from sanvital

मित्ति चित्र (Fresco Painting)

मित्ति चित्रण की परम्परा भी वायजेन्टाइन कला में रही लेकिन इसका स्थान इस काल में गौण रहा इसका कारण आर्थिक दृष्टि था । कम लागत के कारण भी मित्ति चित्रण साधारण वर्ग में लोकप्रिय रहा । Mosic Painting केवल सम्पन्न लोगों में ही अधिक लोकप्रिय रही । व उनकी वैभव का प्रतिक बन गई । मठों में पादरी लोग व्यवसायी चित्रकारों की अपेक्षा स्वयं ही चित्रण करते थे ।

इटली में बायजेन्टाइन शैली के मित्ति चित्र रोम के मेरिया ऐन्टिका गिरिजाघर, केचुआ के निकट सेंट एंजिलो गिरिजाघर और, लम्बार्डी के कैंसलक्लुप्रियों गिरिजाघरों में मिलते हैं । मित्ति चित्रों की शैली अपरिपक्व है पर आकृतियां भावपूर्ण है । मुख्य चित्रों के बीच कुछ अमूर्त अभिप्रायों वाले मित्ति चित्र भी मिलतें हैं ।

उदा० (1) Breaking of Bread, Fresco late 2^{nd} C.A.D. Catacomb of Sta Priscilla, Rome

(2) Good Shepherd

(3) Anastasic (Fresco) C.1310.20 Kariya Cami (Church of the Sarious in Chara)

इस चित्र में दिखाया है कि ईसा मृत्यु के बाद नरक में जाते हैं और वहाँ लड़कर आदम और Eve को बचाकर लाते हैं जब दुसरे लोग बगल में खड़े होकर अपनी मुक्ति का इंतजार कर रहे हैं । मुख्य आकृति में बहुत गति दिखाया है । मुद्रा गतिशील है । नाटकीयता का प्रहरी हुआ है । ईसा की आकृति शक्ति व उर्जा से भरपुर है।

(3) पट्टिा चित्रण Panel Painting

मित्ति चित्रण की भांति पट्टिका चित्रण भी बायुलेन्टाइन कला का एक महत्वपूर्ण अंग रहा क्योंकि इसमें कम व्यय होता था । इस कला का उद्भव शिल्प की दृष्टि से मिश्र व यूनानी, रोमन, समाधि कला से हुआ था । मिश्र में टेम्परा रंगों में सफेद चूने तथा खड़िया के उपर इसका चित्रण किया जाता था । इसकी विधि यह थी कि पहले एक मोटे कपड़े की तह मित्ति पर चिपका दी जाती थी। इस पर खड़िया की परत लग जाती थी । इसके सुख जाने पर टेम्परा से चित्रण किया जाता था । मिश्र में इससे दुसरी विधि भी प्रचलित थी जिसमें मोम के रंग तैयार किये जाते थे और तूलिका के स्थान पर गर्म शलाका का प्रयोग होता था ।

उदा (1) Madona Enthrond 13th Ce. National Gallery Art Washington

इस चित्र में मैडोना सिंघासन पर बैठी हैं । दांयी तरफ बालक गोद में बैठा है । मैडोना का चेहरा बच्चे की ओर देखता बनाया है । आँखे लम्बी पर पतली है । नाक लम्बी मुँह छोटे हैं । पृष्ठभूमि पीले रंग की है । मैडोना का वस्त्र पीले, लाल रंग का है । सलवटें अन्य चित्रों की अपेक्षा अलग दिखाया है । छाया प्रकाश दिखाया है । उपर की तरफ दोनों ओर कृत में क्यूपिड्स दिखाए हैं जो हाथ में ग्लोब व एक में जादू की छड़ी लिए दिखाया है ।

13वीं शताब्दी में पट्टिका चित्रण की लोकप्रियता बहुत बढ़ी अब तक तो प्रायः चित्र में एक ही आकृति अंकित की जाती थी जो ईसा मैरी अथवा किसी सन्त आदि की होती थी । किन्तु अब धार्मिक कथाओं के दृश्यों का अंकन आरम्भ हुआ ।

(4) पुस्तक चित्रणः-

Jean lassus "Christianity is a religion of the Book"

इसाई धर्म पुस्तक का धर्म है । न्यूटेस्टामेंट तथा ओल्ड टेस्टामेंट नामक दो भागों में विभक्त इसाई धर्म की

पुस्तक वाइबल मुख्यतः इतिहास ग्रन्थ है जिसमें यहुदी लोगों का इतिहास तथा ईसा मसीह का जीवन वृत्त वर्णित है । इसके कुछ अध्याय गीतात्मक धार्मिक तथा भविष्यवाणी मूलक है । अन्यथा अधिकांश अध्यायों में और समग्रत वर्णनात्मकता की प्रधानता है ।

चीन के अलावा 8वीं शताब्दी के पूर्व कोई भी देश कागज के बारे में नहीं जानता था । प्रायः पेड़ों की छाल अथवा पशुओं की खाल पर विभिन्न रंगों आदि से लिखाई का कार्य किया जाता था ईस्माल धर्म के प्रचार में जहाँ-जहाँ मुसलमानी आक्रमण हुए वहीं कागज पहुँचाया गया इसे रखने की दो प्रमुख विधि जानते थे कुण्डलित तथा ग्रन्थित । प्रथम विधि का उद्भव मिश्र में हुआ और वहीं से वह बाल्कन्टाइन जगत में आई ।

पुस्तक Rabula Gaspel मेसोपोटामिया के जम्बा नामक स्थान पर चित्रित की गई थी इसमें सीरियक लिपि का प्रयोग है । इसके चित्रों की शैली ~~पूर्ण तथा~~ पूर्वी नहीं है । वैसे इस चित्र की आकृतियाँ पूर्वी विधि की है । उदाहरणार्थ शूली के दृश्यों में ईसा कटिवस्त्र के जगह एवं लम्बा चोगा पहने हैं ।

एक अन्य महत्वपूर्ण चित्रिता पुस्तक The Book of Genesis नियना में है । इसकी तिथि तथा स्थान के संबंध में बहुत विवाद है । लगता है इसकी रचना में बहुत से कलाकारों का सहयोग रहा था । पूर्वी प्रभाव के बावजूद इसकी शैली सामान्यतः पश्चिमी है । वह प्रायः कुकुरमुत्ता तथा छतरी जैसे है और पार्थियन प्रभाव सूचित करते हैं । इसके विपरीत पक्षियों ऊँटों तथा मानवाकृतियों में अधिक स्वभाविकता आई है और उन पर क्लासिकल प्रभाव परिलक्षित होता है । चित्रण श्रेष्ट कोटि की है । अनुमान किया जाता है कि इसकी रचना कुस्तुतनिया में 6 शती के लगभग हुई होगी । इस युग में धार्मिक विषयों के अतिरिक्त अन्य प्रकार की पुस्तकें भी चित्रित की गई । इसकी अत्यन्त लोकप्रिय पुस्तक प्रकृति के अध्ययन से संबंधित थी जिसकी अनेक स्थानों पर अनेक प्रतिलिपियाँ तैयार की गई ।

दूसरी पुस्तक Casmos Indie oplauste थी जो 6 शती में मिश्र में लिखी गई इसकी उपलब्ध प्रति नवीं शति की है इसमें कथाओं अथवा दृश्यों को एक के उपर दुसरा इस प्रकार अंकित किया गया है मानों एक ही दृश्य के कई भाग हैं । शैली में बाजेन्टाइन आलौकिकता का प्रमाण है ।

पेरिस साल्टर नामक एक अन्य पुस्तक के चित्र शास्त्रीय विधि के हैं । उदाहरण स्वरूप गीत गाते हुए दाउद के एक चित्र में आकृतियों का संयोजन पूर्णतः शास्त्रीय विधि के हैं ।

कुछ पुस्तकें निर्धनों के लिए भी तैयार की जाती थी । इसमें केवल ट्राशिये ही चित्रित किए गए हैं ।

अन्य पुस्तकों में सन्तों तथा महान पुरूषों के जीवन चरित्र का भी चित्रण होता था । Homilies नामक पुस्तक 10-11 वीं शती की एक प्रति में 430 चित्र हैं । प्रत्येक चित्र पर चित्रकार का हस्ताक्षर भी है । था0 दृश्यों के अतिरिक्त पुस्तकों के स्वामी के अथवा संरक्षक का भी चित्र होता था ।

नित्यकम संबंधि पुस्तके भी लिखि जाती थी । जिन पर सन्त का चित्र व अन्दर शिक्षाएँ होती थी । जैसे पुस्तक चित्र जॉन मैत्यू, जॉन ल्यूक । कहीं पार्श्व की मुद्रा में हैं तो कहीं सन्मुख । रंग योजना चमकदार स्वभाविक रही । चमकदार किनारे मूल्यवान धातु , हीरे जवाहरात , सोना , चाँदी आदि का प्रयोग हुआ । पुस्तक चित्रण में आड़ी तिरछी भ्रमात्मक रेखओं वृत्तों वर्गो प्रकृति से ली गई वस्तुओं पेड़ पौधें फुल पत्ति पशु पक्षी आदि के रूप लेकर सजाया गया ।

बाजेन्टाइन कला के सामान्य लक्षण

बाजेन्टाइन कला गम्भीरता धार्मिकता सच्चाई और सांसारिकता से परे दुसरी इसाई धर्म कला से कहीं पवित्र हैं । रेखा चित्रण की शैली बाजेनटाइन कला में मिश्र की कला की भांति आरम्भ से ही पायी जाती है । रोमन व पूर्वी कला के साथ इसाई धर्म संबंधी पुस्तकें सजावट की शैली विकसित हो चुकी थी । ऐसा माना जाता है कि इस काल में बाजेन्टाइन की कला यूरोप की कला से उत्तम होती गई ।

(1) समन्यवादी कला

बाजेन्टाइन कला और यूनानी तत्वों का संबंधों एक स्वभाविक प्रकिया थी । मणिकुट्टिम सज्जा भित्ति चित्रण सभी रोमन परम्परा की देन हैं । पाण्डुलिपि सज्जा भी रोमन परम्परा थी । यद्यपि बाजेन्टाइन का रूप मूलतः धार्मिक तत्वों और धा० उद्देश्यों को लेकर निर्धारित हुआ । इसाई धर्म की प्रभुता स्वीकार करने पर रोमन संरक्षकों की रूचि में ही इस कला को प्रभावशाली रूप प्रदान किया ।

(2) शुद्ध कलाः-

प्रारम्भ से ही इसाई कला का अतिव्यक्तिवादी और प्रतिकवादी रूप उसके प्रथम चरण के रूप में उभरा । यर्थाथ को त्यागकर भावाभि व्यक्ति को प्रमुख उद्देश्य के रूप में इसाई

कला ने अंगीकार कर लिया था । अतः रोमन शासकों के संरक्षण में भी इसाई धर्म को स्वीकार करने के बाद जब वासेन्टाइन कला का उद्भव और विकास हुआ तो उसमें अभिव्यक्ति तत्व ही उसका प्रधान लक्षण जब गया । धार्मिक सिद्धांतों की नयी कलात्मक व्याख्या की आवश्यकता थी जिसे कलाकारों ने मौलिक एवं सृजनात्मक विधि द्वारा पूरा किया । पूर्व इसाई की तरह वासेन्टाइन कला मात्र धार्मिक अभिव्यक्ति ही नहीं वरन रोमन शास्त्रीय वैभव की अभिव्यक्ति भी थी । अतः जहाँ उसमें इसाई कला की सरलता बनी रही तो दुसरी ओर वह इसाई धर्म के आध्यात्मिक स्त्रोतों से दूर होती चली गई । प्रतिकवादी सरलता का सज्जा मूलक अभिरूचि चित्रों की भाव प्रधानता इसाई कला को एक ऐसे पराभौतिक स्तर पर ला दिया जहाँ उसके सूक्ष्म कलात्मक तत्व उभरकर सामने आये और बाजेन्टाइन शैली शुद्ध कला के सर्वोत्तम रूप में मुखरित हुई ।

(3) दरबारी स्वरूप–

रोमन तो पहले से ही अपने वैभव प्रदर्शन में अद्वितीय थे । साथ–साथ इसाई धर्म के लम्बे उत्पीड़नमय संघर्ष के पश्चात् उसकी राजनीतिक विजय का उल्लास इनके

सम्मिलित प्रभाव में बासेन्टाइन कला एक सम्पन्न दरबार कला के रूप में विकसित हुई ।

(4) पूर्वी कला– इसाई धर्म यूरोप में ही नहीं वरन् पश्चिमी ऐसिया में भी जन्मा था । साथ ही बाजेन्टीयून भी एशिया में स्थित था । वस्तुतः बाजेन्टाइन कला स्वभाव में मूलतः पूर्वी कला है । भले ही वह यूरोप की शास्त्रीय कला की उत्तराधिकारी हो ।

(5) धार्मिक महत्व–

बाजेन्टाइन कला धर्म से शुरू से ही वास्तविक रूप से जुड़ी रही वस्तुत धर्म से अलग इसाई कला की कल्पना नहीं कर सकते । पादरियों के निर्देश कला रूपों को निर्धारित करने में कलाकारों की स्वतंत्रता अभिरूचि की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली थे धार्मिक प्रचार का माध्यम होने का कारण भी कला में रेखा, रंग, रूप, पादरियों की इच्छानुसार होना था । परिणाम स्वरूप यह कला एक परम्परावादी और अलौकिक कला बन गई । इनमें लाक्षणिक परिवर्तन भी यदि कभी आए तो वे पुर्न जागरण कला की तरह कलाओं के कारण नहीं वरन शासकों की धार्मिक कथनानुसार हुए । स्वयं राज्य धर्म की सेवा में लगा हुआ था । अतः इसके द्वारा पोषित कला भी धर्म की सेवा में ही लगी रही ।